

फमाचा : बकरियों में घातक हेमोंकोसिस रोग के निदान और रोकथाम के लिए एक उपयोगी तकनीक

पल्लव शेखर, विवेक कुमार सिंह, मृत्युन्जय कुमार, ज्ञान देव सिंह, सुधीर कुमार एवं नम्रता पशुचिकित्सा औषधी विभाग एवं पशु नैदानिक परिसर

बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय

[DOI:10.5281/TrendsInAgri.13789566](https://doi.org/10.5281/TrendsInAgri.13789566)

भारत में विश्व स्तर पर सबसे बड़ी बकरी आबादी है, जिसमें बकरी पालन आजीविका प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, खासकर समाज के आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों को। माँस और दूध के माध्यम से बकरियाँ उच्च गुणवत्ता वाले पशु प्रोटीन का एक श्रोत हैं। हालांकि, भारत में बकरियों की उत्पादकता अक्सर विभिन्न कारणों के कारण कम होती है, जिसमें गैस्ट्रोइंटेस्टाइनल परजीवी एक महत्वपूर्ण चिंता का विषय है।

गैस्ट्रोइंटेस्टाइनल परजीवी का प्रभाव

गैस्ट्रोइंटेस्टाइनल नेमाटोड, विशेष रूप से हेमोंकस कॉन्टोर्टस, बकरी के स्वास्थ्य के लिए एक गंभीर खतरा पैदा करते हैं, जिसमें दीर्घकालिन (क्रोनिक) संक्रमण होता है, जिसके परिणामस्वरूप उच्च रूग्णता के साथ उत्पादकता कम हो जाती है, और यहाँ तक कि तीव्र मामलों में भारी मृत्यु दर भी होती है। हेमोंकस कॉन्टोर्टस बकरी के अबोमेसम में पाया जाता है और बकरी का रक्त चूसकर उसमें रक्ताल्पता पैदा करता है। परजीवी संक्रमण का जल्दी निदान करना चुनौतीपूर्ण है, विशेष रूप से दूरदराज के क्षेत्रों में सीमित पशु चिकित्सा सुविधाओं और कृमिनाशक दवा की उपयोगिता के बारे में बकरी पालक के बीच जागरूकता की कमी होना है।

फमाचा तकनीक

फमाचा एक व्यावहारिक तकनीक है जिसे बकरियों में रक्ताल्पता के स्तर का आकलन करके हेमोंकस संक्रमण के निदान में बकरी पालक की सहायता के लिए विकसित किया गया है। रक्ताल्पता हेमोंकोसिस का एक महत्वपूर्ण लक्षण है। यह तकनीक बड़े झुंडों के लिए विशेष रूप से उपयोगी है, जहाँ प्रत्येक बकरी की जाँच अव्यवहारिक है। फमाचा कम लागत और कम समय में खून की कमी को पहचानने का एक प्रभावी एवं सरल तरीका है। इसके उपयोग

से अनावश्यक कृमिनाशक दवा का उपयोग और कृमिनाशक के प्रतिरोध के विकास को कम करने में मदद करता है।

हेमोकोसिस के होने के लक्षण

हेमोकोसिस में पशु सामान्यतः बहुत कमजोर हो जाता है, वजन में कमी आने लगती है, चारा खाना कम कर देता है, आँख की श्लेष्मा झिल्ली सफेद हो जाती है, जबड़े के नीचे तरल इकट्ठा हो जाता है (बोतल जैसा), किसी-किसी पशु की अचानक मृत्यु हो जाती है। ज्यादातर पशुओं में ज्वर नहीं होता है परन्तु जीवणु या विषाणु का साथ में संक्रमण होने से ज्वर भी हो सकता है।

फमाचा स्कोरिंग सिस्टम

फमाचा प्रणाली बकरियों में नेत्र श्लेष्मा झिल्ली के रंग का आकलन करने के लिए एक

स्कोरकार्ड का उपयोग करती है,

जो रक्ताल्पता की गंभीरता से संबंधित है:-

फमाचा स्कोर-1 : सामान्य (स्वस्थ लाल रंग)

फमाचा स्कोर-2 : स्वीकार्य

फमाचा स्कोर-3 : सीमा रेखा (जोखिम में माना जाता है)

फमाचा स्कोर-4 : खतरनाक

फमाचा स्कोर-5 : घातक (तत्काल उपचार आवश्यक)



चित्र 1

श्लेष्मा झिल्ली के कम लाल होने का फमाचा से तुलना

उपयोग और लाभ

फमाचा प्रणाली हेमोकोसिस संक्रमण के कारण गंभीर रक्ताल्पता के जोखिम में बकरियों की पहचान करने में मदद करती है, जिस कारण समय से विशिष्ट कृमिनाशक और खून बढ़ने की औषधि का उपयोग उपचार के लिए किया जाता है। यह चयनात्मक उपचार दृष्टिकोण न केवल बकरी के स्वास्थ्य में सुधार करता है बल्कि कृमिनाशक के अनावश्यक उपयोग को भी कम करता है। इस प्रकार कृमिनाशक प्रतिरोध के विकास के जोखिम को कम करता है। फमाचा तकनीक का उपयोग करके, बकरी पालक हेमोकोसिस के विनाशकारी प्रभावों को प्रभावी ढंग से रोक सकते हैं, जिससे उनके झुंड में बेहतर स्वास्थ्य और उत्पादकता सुनिश्चित हो सकती है।